

वैश्विक बैंकिंग गतिविधियां

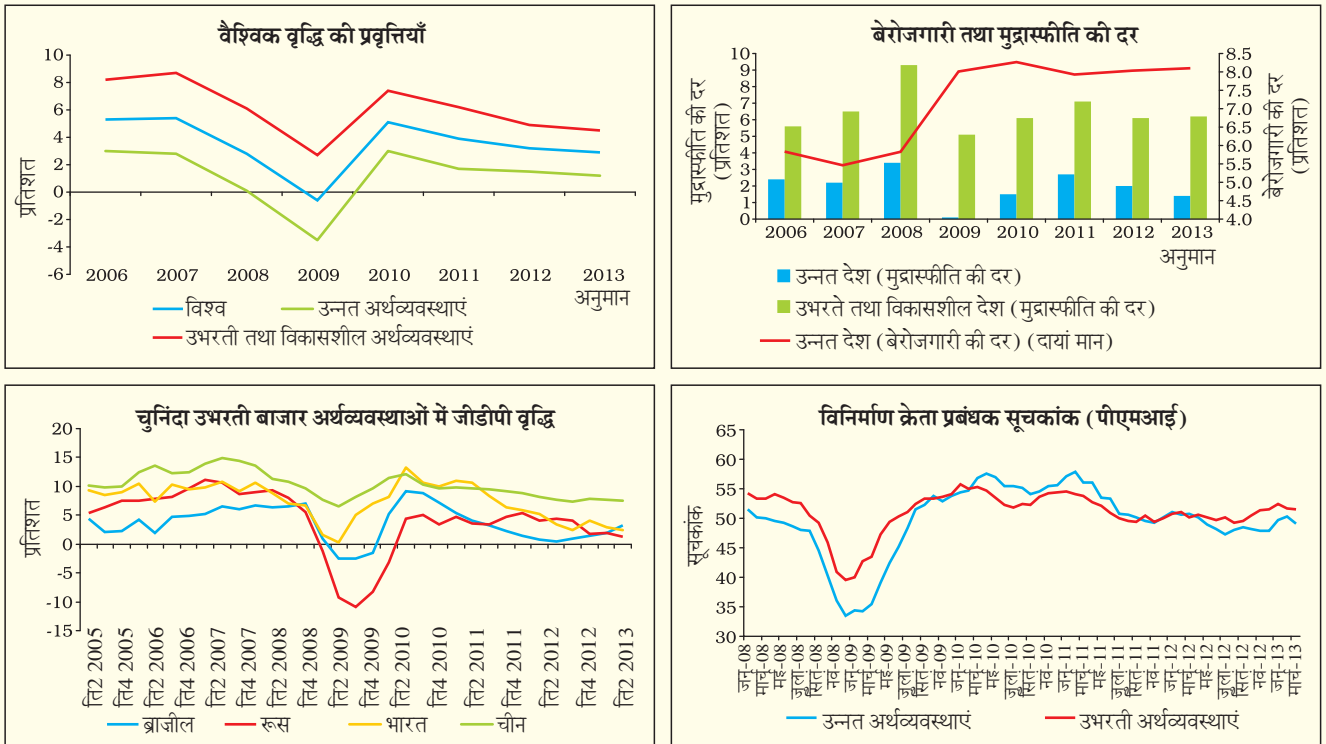
उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में केंद्रीय बैंकों द्वारा किए गए मौद्रिक सुगमता के उपायों से वैश्विक बैंकिंग प्रणाली में वित्तीय स्थिति में सुधार हुआ। अमरीका में बैंक अपने तुलनपत्रों में सुधार लाने की उन्नत अवस्था में हैं। किंतु यूरोपीय बैंकों की आस्ति गुणवत्ता संबंधी चिंता बनी हुई है। जहां उभरती अर्थव्यवस्थाओं में बैंकिंग क्षेत्र के मूल तत्व तुलनात्मक रूप से सुदृढ़ थे, वहीं वृद्धि में गिरावट से चुनौती सामने आ सकती है। बासेल III, प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं (एसआईएफआई) और डेरिवेटिव सुधारों के संबंध में काफी प्रगति हुई है। आगे, वैश्विक बैंकिंग प्रणाली के लिए जोखिम बना हुआ है। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण वैश्विक ब्याज दर चक्र का ऊर्ध्वमुखी हो जाना है जब फेड ने अपना मात्रात्मक सुगमता कार्यक्रम छोड़ दिया जिससे ऋण जोखिम में वृद्धि हो गई। बैंकों द्वारा उनके तुलनपत्रों में सुधार का कार्य शीघ्र पूरा होना और विनियामक सुधारों को लागू करने से मध्यावधि में बैंकिंग प्रणाली की स्थिरता मजबूत होगी।

1. परिचय

2.1 वर्ष 2012 में वैश्विक अर्थव्यवस्था मंद गति से बढ़ी जो कि यह दर्शाती है कि वैश्विक वित्तीय संकट का प्रभाव पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ था। वैश्विक वृद्धि 2012 में कम होकर 3.2

प्रतिशत रह गई जो कि 2011 में 3.9 प्रतिशत थी (चार्ट II.1)। 2013 का पूर्वानुमान दर्शाता है कि वैश्विक वृद्धि की मंद गति बनी रहेगी। आईएमएफ की वैश्विक आर्थिक संभावना के अनुसार 2013 में वैश्विक वृद्धि और कम होकर 2.9 प्रतिशत रह जाएगी।

चार्ट II.1 वैश्विक समष्टि-आर्थिक प्रवृत्तियाँ



स्रोत: वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और थॉमसन रायटर्स डाटा स्ट्रीम।

यह मंद वैश्विक अनुमान काफी हद तक अनेक उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में धीमी वृद्धि और यूरो क्षेत्र में मंद सुधार से प्रभावित था।¹

2.2 इस वैश्विक समष्टिआर्थिक स्थिति की पृष्ठभूमि में, अध्याय 2 में चुनिंदा उन्नत और उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए बैंकिंग कार्य और सुदृढ़ता के प्रमुख संकेतकों का उपयोग करके वैश्विक बैंकिंग प्रणाली के कार्य निष्पादन का विश्लेषण किया गया है। अध्याय 3 में चुनिंदा उन्नत और उभरती अर्थव्यवस्थाओं में बैंकिंग प्रणाली के कार्य निष्पादन का विश्लेषण किया गया है। अध्याय 4 में प्रमुख वैश्विक उपस्थिति वाले शीर्ष 100 बैंकों के निष्पादन का विश्लेषण किया गया है। अगले भाग में वर्ष के दौरान वैश्विक बैंकिंग प्रणाली संबंधी प्रमुख विनियामक और पर्यवेक्षी नीतिगत पहलों को दर्शाया गया है। अंतिम अध्याय में 2014 के लिए वैश्विक बैंकिंग क्षेत्र का समग्र आकलन और संभावना प्रस्तुत की गई है।

2. वैश्विक बैंकिंग प्रवृत्ति

2.3 वैश्विक रूप से, बैंक अपनी स्थिति और पूंजी अनुपात सुधारने के प्रयास निरंतर करते रहे, हालांकि देशवार उनकी गति में अंतर था। 2012 के उत्तरार्ध और 2013 में अब तक वैश्विक बैंकिंग प्रणाली की निधीयन लागत में सुधार हुआ जिसका आधार उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में केंद्रीय बैंकों द्वारा मात्रात्मक सुगमता के लिए किए गए प्रयास था। वैश्विक स्तर पर विनियामक सुधारों को लागू करने के लिए बैंकों को अपनी आस्ति गुणवत्ता में और अधिक सुधार करना आवश्यक होगा। कम-से-कम उन बैंकों, जो कि ठइतने विशाल हैं कि जो विफल नहीं हो सकतेड के लिए उनके कारोबार के मिश्रण को युक्तियुक्त बनाना अनिवार्य है क्योंकि विनियमन के अनुसार उनसे यह अपेक्षित होगा कि वे अपनी मूल वाणिज्यिक बैंकिंग सेवाओं को निवेश कार्यों से सुरक्षित रखें।

2.4 वैश्विक ऋण की वृद्धि बहुगतीय थी। अमरीका और कुछ उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) के

बैंकों के आस्ति पर प्रतिलाभ (आरओए) में सुधार हुआ किंतु यूरोपीयन देशों में यह कम हो गया। चुनिंदा क्षेत्रों और देशों में बैंकिंग की प्रवृत्ति के विश्लेषण से पता चलता है कि अमरीका के बैंकों की वित्तीय स्थिति में सुधार हुआ किंतु यूरो क्षेत्र के बैंकों की वित्तीय स्थिति निरंतर दुर्बल बनी रही। यूरो क्षेत्र के देशों में बैंकों की वित्तीय स्थिति संबंधी चिंता भी बनी रही। यूके के बैंकों ने अपने पूंजी अनुपात में सुधार किया किंतु यूरो क्षेत्र के प्रति उनका जोखिम चिंता का मामला बना रहा।

2.5 शीर्ष 100 वैश्विक बैंकों के निष्पादन के विश्लेषण से पता चलता है कि वैश्विक बैंकिंग में उभरती अर्थव्यवस्थाओं का हिस्से में निरंतर वृद्धि हुई है जिसमें चीन के एक बैंक (इंडस्ट्रियल एंड कमर्शियल बैंक ऑफ चाइना) ने वैश्विक बैंकिंग रेटिंग में शीर्ष स्थान दर्ज किया। वैश्विक नीतिगत सुधारों के संबंध में, बासेल III, प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाएं (एसआईएफआई) और डेरिवेटिव बाजार इंफ्रास्ट्रक्चर के संबंध में नियमों की संरचना में कुछ प्रगति हुई है।

क्षेत्रों के बीच ऋण वृद्धि में अंतर

2.6 अर्थव्यवस्थाओं के वृद्धि निष्पादन में भिन्नता दर्शाते हुए अर्थव्यवस्थाओं के बीच ऋण वृद्धि में भी असमानता दिखी (चार्ट II.2)।

आस्तियों पर प्रतिलाभ में संमिश्र प्रवृत्ति दिखी

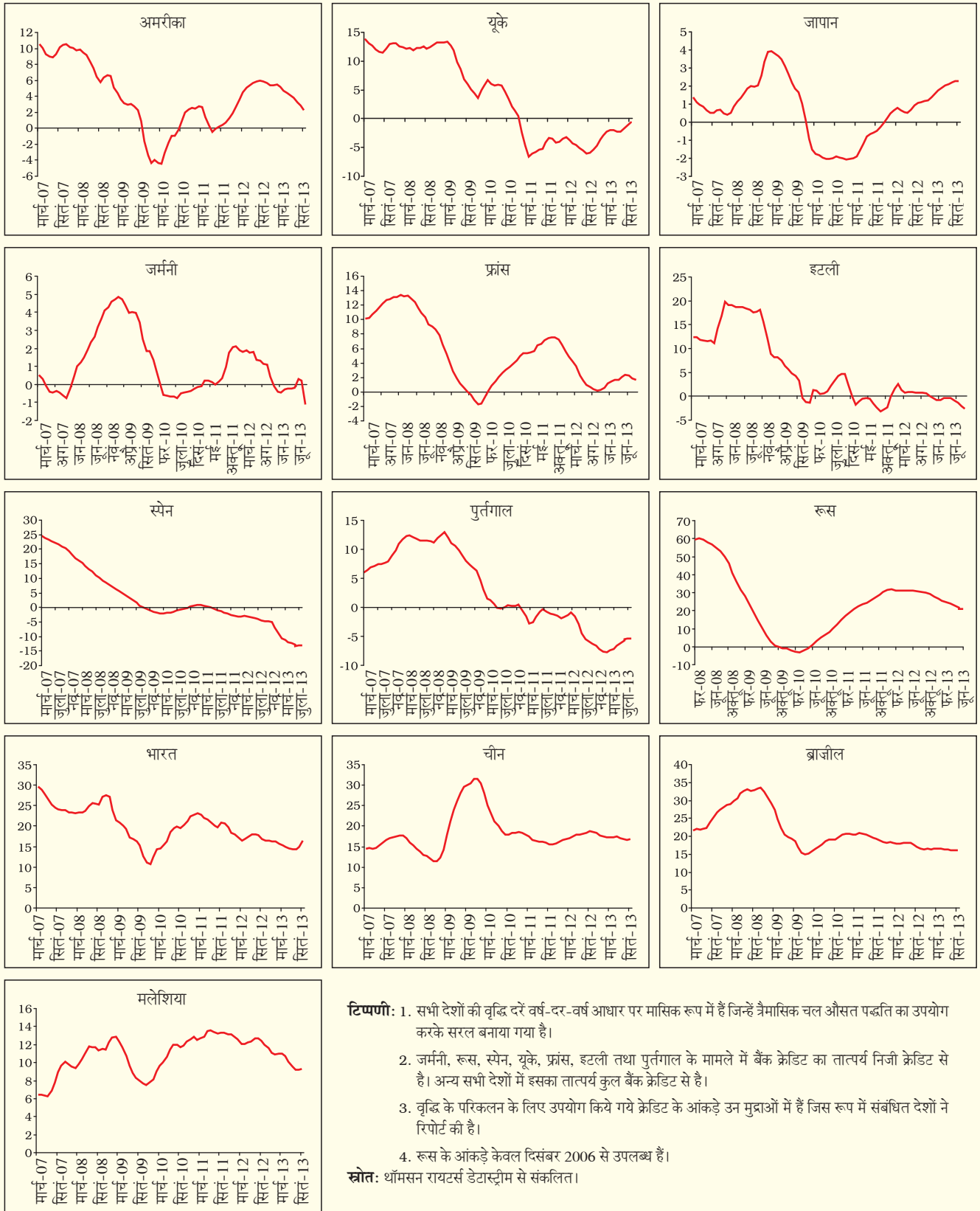
2.7 आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए), जो कि बैंकिंग प्रणाली की लाभप्रदता का एक संकेतक है, में अर्थव्यवस्थाओं के बीच भिन्नता की प्रवृत्ति दिखी। सामान्यतः ईएमडीई ने 2012 में भी आरओए का उच्च स्तर बनाए रखा (सारणी II.1)।

मात्रात्मक सुगमता (क्यूई) के उपायों के चलते वित्तीय दबाव कम हो गया

2.8 स्पेन में बैंक संकट और ग्रीस में राजनैतिक अस्थिरता के कारण 2012-13 की दूसरी तिमाही में बदतर हो गई वित्तीय

¹ वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक, आईएमएफ, अक्टूबर 2013

चार्ट II.2: बैंक की ऋण वृद्धि का त्रैमासिक चल औसत (प्रतिशत में)



सारणी II.1: चुनिंदा देशों के बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ

देश	2007	2008	2009	2010	2011	2012
(प्रतिशत)						
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं						
फ्रांस	...	0.1	0.3	0.6	0.4	0.3
जर्मनी	0.3	-0.1	0.2	0.4	0.5	0.4
ग्रीस	1.0	0.9	0.4	0.0	-9.5	-1.8
इटली	0.8	0.3	0.3	0.3	-0.9	0.1
जापान	0.5	0.3	-0.2	0.2	0.3	0.3
पुर्तगाल	1.2	0.3	0.4	0.5	-0.3	-0.3
स्पेन	1.1	0.8	0.6	0.5	0.1	-1.4
यूनाइटेड किंगडम	0.4	-0.1	0.0	0.3	0.3	0.3
अमरीका	1.2	-0.1	0.2	0.9	1.2	1.4
उभरते बाजार तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाएं						
रूस	3.0	2.1	0.7	2.0	2.5	2.4
चीन	0.9	1.0	0.9	1.1	1.3	1.3
भारत	0.9	1.0	1.0	1.0	0.9	1.0
मलेशिया	1.5	1.5	1.2	1.5	1.5	1.6
ब्राजील	3.5	2.1	1.7	1.9	1.7	1.4
मेक्सिको	2.3	1.4	1.5	1.8	1.5	1.8

टिप्पणी: उपलब्ध नहीं

2012 के आंकड़े इटली के लिए जून से संबंधित हैं।

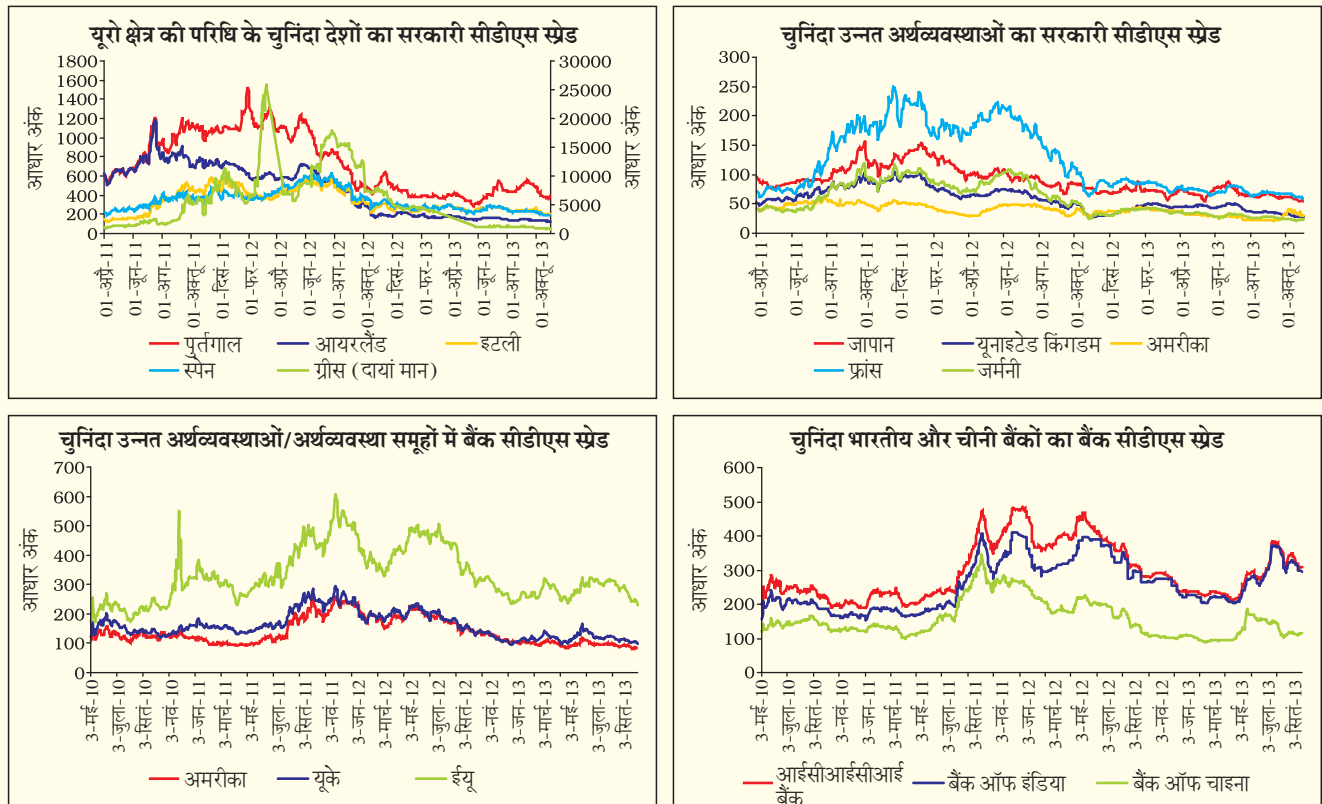
स्रोत: अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के वित्तीय सुदृढ़ता संकेतकों से संकलित।

स्थिति में बाद में काफी सुधार हुआ जिसका कारण उन्नत केंद्रीय बैंकों द्वारा किए गए मात्रात्मक सुगमता के उपाय थे (चार्ट II.3)। यूएस फेडरल रिजर्व ने ‘‘ओपन एंडेड’’ मात्रात्मक सुगमता (क्यूई-3) कार्यक्रम शुरू किया जबकि यूरोपीयन सेंट्रल बैंक (ईसीबी) ने तत्काल मौद्रिक लेनदेन (ओएमटी) कार्यक्रम शुरू किया। किंतु कम ब्याज दरों की दीर्घ अवधि और केंद्रीय बैंक आस्तिक्रय कार्यक्रम छोड़ने से नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है जिससे वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम बढ़ सकता है (बाक्स II.1)।

बेहतर निधीयन स्थिति से बैंक स्टॉक में सुधार के संकेत मिले हैं

2.9 बैंक स्टॉक के संकेतकों में, विशेष रूप से 2012-13 की दूसरी छमाही में, वृद्धि हुई क्योंकि वित्तीय सुगमता से बैंकों के

चार्ट II.3: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं का सरकारी और बैंक सीडीएस स्प्रेड



टिप्पणी: सरकारी स्प्रेड 5-वर्षीय सीनियर सीडीएस के लिए है जबकि बैंकों का स्प्रेड 5-वर्षीय सीडीएस के लिए है।

स्रोत: सरकारी स्प्रेड के लिए ब्लूमबर्ग और बैंकों के स्प्रेड के लिए थॉमसन रायटर्स, डेटास्ट्रीम।

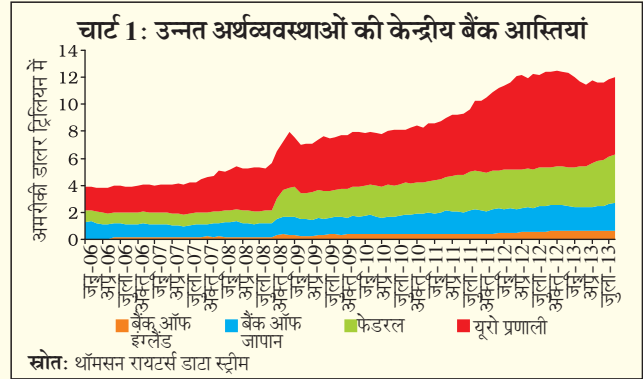
बॉक्स II.1:

प्रमुख केंद्रीय बैंकों में अपारंपरिक मौद्रिक नीति संबंधी वित्तीय स्थिरता जोखिम

वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के केंद्रीय बैंकों ने वित्तीय बाजारों के कामकाज को बहाल करने के लिए बहुत कम ब्याज दरें, मात्रात्मक सुगमता (क्यूई), दीर्घावधि चलनिधि प्रावधान तथा निजी आस्ति खरीद जैसे बहुत से अपारंपरिक उपाय किए। इन नीतियों को व्यापक सफलता मिली तथा बाजारों में कामकाज चलने लगा और सामान्येतर जोखिम (टेल रिस्क) में काफी कमी आई। हालांकि, ऐसे उपायों के कारण इन केंद्रीय बैंकों के तुलन पत्रों का काफी विस्तार हुआ। आस्तियों की अवधि और विविधता में वृद्धि सहित इसके परिणामस्वरूप आस्ति गुणवत्ता में कमी आई (आईएमएफ जीएफएसआर 2013)। केंद्रीय बैंकों की आस्तियों में अपूर्व वृद्धि के कारण प्रणाली में वित्तीय जोखिम बढ़ सकता है जिसके उनकी वित्तीय मजबूती और स्वतंत्रता पर विपरीत असर पड़ सकता है (चार्ट 1)।

केंद्रीय बैंकों के तुलन पत्र जोखिम ब्याज दरों में वृद्धि और प्रचालन आय में कमी के कारण मूल्यांकन क्षति का रूप धारण कर सकते हैं क्योंकि वे कम ब्याज दरों पर बहुत अधिक सरकारी बांड धारित करते हैं और जब वे अपारंपरिक नीतियों को छोड़ देंगे तब उन्हें ऋण जोखिम सहित आस्तियों की क्षति की संभावित हानि भी हो सकती है। अमरीकी फेडरल रिजर्व, बैंक ऑफ इंग्लैंड तथा बैंक ऑफ जापान के समक्ष ब्याज दरों का जोखिम है क्योंकि वे बहुत बड़ी मात्रा में सरकारी बांड धारित किए हुए हैं जबकि यूरोपीय सेंट्रल बैंक को ऋण जोखिम का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि इस बैंक ने यूरो क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले देशों में ऋण प्रदान करने में अपना निवेश बढ़ा दिया है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का अनुमान है कि ब्याज दर में 1 प्रतिशत की वृद्धि होने से फेडरल रिजर्व की कुल आस्तियों का लगभग 4 प्रतिशत, बैंक ऑफ जापान की कुल आस्तियों का 1.75 प्रतिशत और बैंक ऑफ इंग्लैंड की 6.5 प्रतिशत पूंजी का नुकसान हो सकता है।

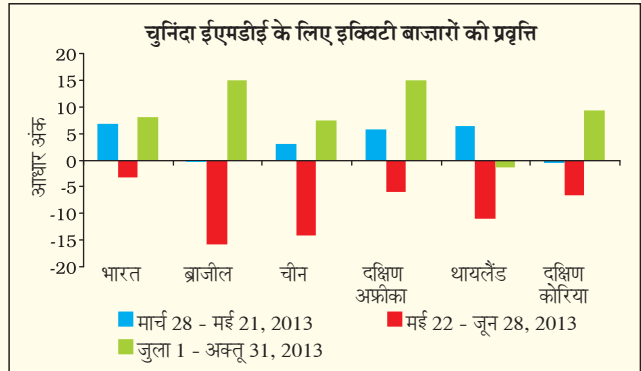
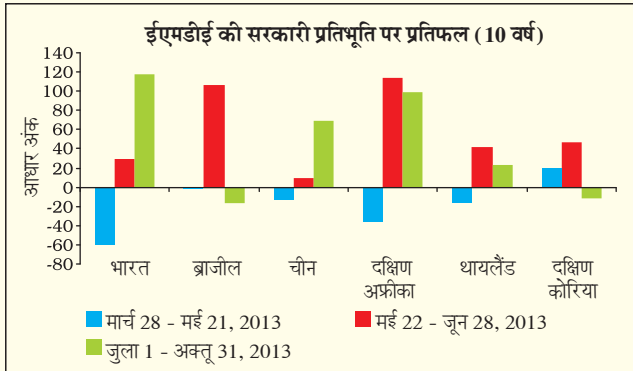
अपारंपरिक मौद्रिक नीतियों की अवधि अधिक लंबी होने के कारण भी संबंधित देशों अर्थव्यवस्थाओं में संभावित जोखिम बढ़ गया होगा। ब्याज दरों के कम होने के कारण वित्तीय संस्थाओं पर अधिक लाभ कमाने के लिए अत्यधिक जोखिम उठाने का दबाव बढ़ गया है जिसके कारण आस्तियों के मूल्यों में अस्थायी रूप से अत्यधिक वृद्धि हो सकती है। हाल की अवधि में



बैंकों और वित्तीय संस्थाओं का केंद्रीय बैंक के वित्तपोषण पर निर्भर होना बढ़ता जा रहा है जिसके कारण वित्तपोषण के निजी स्रोतों को बहाल होने में बाधा पड़ सकती है और इसका परिणाम ऋण मानकों में शिथिलता के रूप में भी देखा जा सकता है। इसके अलावा, केंद्रीय बैंकों द्वारा वर्तमान अपारंपरिक मौद्रिक नीतियों को छोड़ने से आने वाले समय में ब्याज दर में वृद्धि हो सकती है जिससे बैंकों के लिए ब्याज दर जोखिम बढ़ सकता है। बैंकों को स्थायी-दर प्रतिभूतियों में भी पूंजी हानि हो सकती है। ब्याज दरों में वृद्धि होने से ऋण प्रदान करने में कमी आ सकती है जिससे ऋण जोखिम बढ़ सकता है। केंद्रीय बैंकों के बाजार से निकल जाने से बैंकों को निधीयन की चुनौतियों का भी सामना करना पड़ सकता है।

उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और उभरते बाजार तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) के बढ़ते एकीकरण को देखते हुए, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में केंद्रीय बैंकों की नीतिगत कार्रवाई का असर उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं पर भी पड़ेगा। अमरीकी फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष द्वारा 22 मई 2013 को यह संकेत देना कि यदि आर्थिक स्थिति में तेजी से सुधार हुआ तो फेडरल रिजर्व अपने आस्ति खरीद कार्यक्रम में कमी ला सकता है; और उसके बाद फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष द्वारा 19 जून 2013 को इस वर्ष के दौरान बाद में आस्ति

चार्ट 2: अमरीकी फेडरल घोषणा के बाद उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में विक्रय



(जारी...)

(.... समाप्त.)

खरीद में नपेतुले कदम उठाते हुए 2014 के मध्य तक मात्रात्मक शिथिलता में कमी लाने के अधिक स्पष्ट रूप से दिशानिर्देश दिए जाने का उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के बाजारों पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। वे अत्यधिक दबाव में आ गए क्योंकि उच्च ब्याज दरों के कारण बांड बिक्री से वर्तमान बांड धारिताओं पर काफी नुकसान होने की आशंका के साथ में पूंजी के वापस अमरीका में आने लगी। पोर्टफोलिया कैपिटल, विशेषरूप से बांड बाजार के संदर्भ में, उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं से बहिर्वाह देखा गया। जिससे बांड लाभ तथा इक्विटी बाजारों में बिक्री बढ़ी (चार्ट 2)। 18 सितंबर 2013 को अपने आस्ति क्रय को बनाए रखने के अमरीकी फेडरल रिजर्व के निर्णय के पश्चात ईएमडीई के इक्विटी बाजार में

लिए निधीयन की स्थिति में सुधार हुआ (चार्ट II.4)। यूरो क्षेत्र के बैंकों की भी बाजारों में पहुंच थी और वे संसाधन जुटा सकते थे। ईएमडीई में भी बैंकिंग स्टॉक में 2012-13 की दूसरी तिमाही में वृद्धि हुई। किंतु यूएस फेड द्वारा मई 2013 के मध्य में मात्रात्मक सुगमता में सभाव्य कमी आने की टिप्पणी के चलते ईएमडीई से निवेशों का बहिर्वाह बढ़ गया जिससे इन देशों में बैंक स्टॉक में गिरावट हो गई।

अंतर-बैंक भिन्नता काफी कम हो गया

2.10 अंतर-बैंक बाजार भिन्नता, जो कि 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान काफी बढ़ गई थी, में कमी आ गई जिसका कारण जोखिम की धारणा में कमी आना तथा केंद्रीय बैंकों द्वारा चलनिधि की आपूर्ति में वृद्धि करना था (बाक्स II.2)।

पूंजी प्रवाह बढ़ गया। किंतु फेड के निर्णय के कारण सरकारी आय में समतुल्य कमी नहीं आई।

सामान्यतः, अपारंपरिक मौद्रिक नीति से बाहर निकलने के जोखिम की शुरुआत अन्य बातों के अलावा समय, अनुक्रम तथा बाहर निकलने की गति से होती है। एक अन्य चुनौती भौगोलिक परिस्थितियों के बीच और उनके अंतर्गत विभेदी आर्थिक परिस्थितियों की प्रत्याशा से निपटना है।

संदर्भ:

आईएमएफ (2013): वित्तीय संकट वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम होने के संबंध में केंद्रीय बैंक की नीतियां, वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट, आईएमएफ, अप्रैल

अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग कारोबार में गिरावट

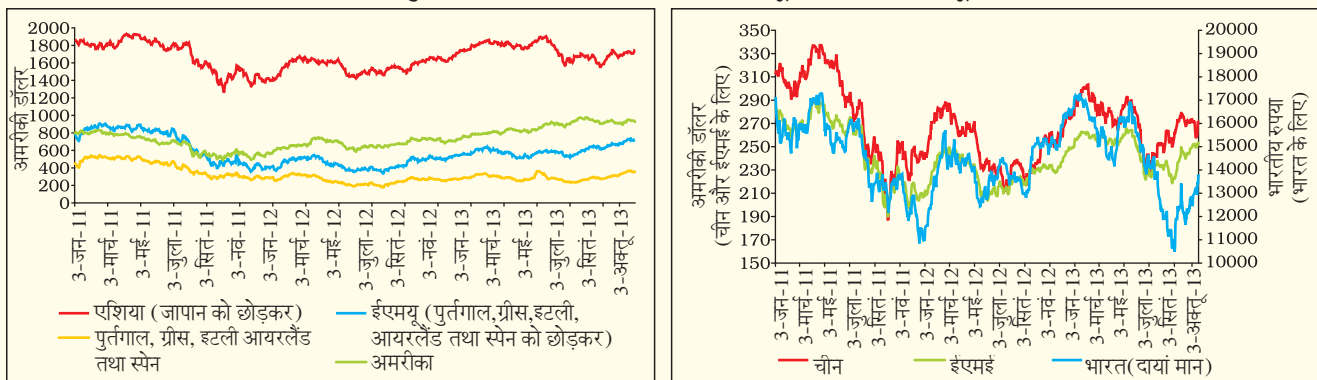
2.11 अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग कारोबार में संकुचन (सूचना देने वाले बैंकों के स्थान के अनुसार) 2012-13 के दौरान भी जारी रहा (सारणी II.2)। इस गिरावट की विशेषता यूरो क्षेत्र में सीमा-पारीय दावे थे।

बैंकों की वित्तीय सुदृढ़ता

पूंजी पर्याप्तता स्तरों में कुछ सुधार हुआ

2.12 बैंकों द्वारा अपनी पूंजी की स्थिति को मजबूत करने के लिए किए गए गहन प्रयासों से यूरो क्षेत्र की परिधि के देशों सहित अनेक अर्थव्यवस्थाओं में पूंजी पर्याप्तता के स्तर में वृद्धि हुई। किंतु ग्रीस जैसे इस परिधि के देशों में पूंजी पर्याप्तता स्तर में और सुधार की आवश्यकता है (सारणी II.3)।

चार्ट II.4: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं/ अर्थव्यवस्था समूहों में बैंक स्टॉक सूचकांक



टिप्पणी: ईएमयू का तात्पर्य यूरोपियन मॉनेटरी यूनियन से है।

स्रोत: थॉमसन रायटर्स, डेटास्ट्रीम।

बॉक्स II.2 : वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान बैंकों द्वारा चलनिधि की जमाखोरी

वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान, विशेषरूप से अगस्त 2007 में और सितंबर 2008 में लीमैन ब्रदर्स तथा एआईजी की विफलता के बाद, अल्पावधि निधीयन बाजारों में बहुत से व्यवधान पैदा हुए। जहां आस्तित्व समर्थित बंधक स्थिर हो गए वहीं अंतरबैंक उधार दरें रिकार्ड उच्च स्तर पर पहुंच गईं (चार्ट 1)। विशेषरूप से बहुत अधिक चलनिधि वाले रिपो बाजार में नाटकीय ढंग से कमी आई और उधारकर्ताओं द्वारा ऋण समझौतों (गॉर्टेन एवं मेट्रिक, 2012) को आगे बढ़ाने से मना करने के माध्यम से उनकी निधियों को वापस लेने के कारण अप्रत्याशित 'हेयरकट्स' देखे गए। प्रतिपक्षी आहरणों तथा ऋण की मनाही जिससे चलनिधि में कमी आयी, अपर्याप्त पूंजी के रूप में परिणत हुई जिसके कारण चलनिधि का गंभीर संकट उत्पन्न हुआ और इसके कारण बहुत से बैंक समाप्त हो गए। बाद में बहुत से देशों में अंतर-बैंक बाजार में चलनिधि प्राप्त करने में कठिनाई हुई। केंद्रीय बैंकों की अपनी उधार प्रदान करने की सुविधा के माध्यम से बैंकों को ऋण दिए जाने के परिणामस्वरूप भी ऋण में वृद्धि के स्थान पर चलनिधि की जमाखोरी हुई (चार्ट 2)। अतः यह समझने के लिए कि किस प्रकार से चलनिधि की जमाखोरी की बैंकों की कार्रवाई के कारण अंतर-बैंक बाजार में चलनिधि की कमी होने और अंततः उनके प्रतिपक्षों की ओर से चूक होती है, संकट के दौरान बैंकों की उधार देने की प्रवृत्ति का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है।

साहित्य में तनावपूर्ण आर्थिक स्थितियों में चलनिधि जमाखोरी के संबंध में बैंकों के उद्देश्यों का उल्लेख एहतियाती, रणनीतिपरक उद्देश्य और प्रमुख अनिश्चितताओं के रूप में किया गया है।

एहतियाती उद्देश्य: बैंकों द्वारा एहतियाती उद्देश्य से चलनिधि संग्रह का निर्णय लिया जा सकता है यदि बैंक को लगे कि वे चलनिधि कमी की समस्या आने पर अंतर-बैंक

ऋण प्राप्त नहीं कर पाएंगे। बाजार की विषम स्थिति से बैंक को आशंका होने लगती है कि इन्हें प्रतिपक्ष जोखिम के स्रोत के रूप में माना जा सकता है और बाजार में उनकी पहुँच प्रभावित हो सकती है। अमरीका के मामले में डेटा का विश्लेषण बताता है कि बैंक द्वारा दिए जाने वाले उधार में आई एक-चौथाई से अधिक गिरावट बैंकों के चलनिधि जमाखोरी संबंधी एहतियाती उद्देश्य के कारण है (बेरोस्पाइड 2013)।

रणनीतिपरक उद्देश्य: बैंक इस पूर्वानुमान से भी चलनिधि की जमाखोरी कर सकते हैं कि सख्त चलनिधि स्थिति अन्य बैंकों को उनकी आस्तियों को अत्यंत कम मूल्य पर बिक्री करने को बाध्य कर सकती है और इस मौके का लाभ उठाने के लिए उन्हें चलनिधि की जरूरत पड़ सकती है। यदि यह अपेक्षा की जाती है कि नकदी की भावी मांग अत्यधिक होगी तो आस्तियों का मूल्य कम होगा। यदि बैंक के सामने ऐसी परिस्थिति आती है तो वे अपनी पर्याप्त चलनिधि के सहारे अत्यंत कम मूल्य पर बेची जाने वाली गैर-चलनिधियुक्त आस्तियां खरीद कर लाभ उठा सकते हैं (डाइमंड और राजन 2009)। बैंक जोखिम के फैलने की दृष्टि से अंतर-बैंक बाजार में अपने प्रतिपक्षों के दिवालियेपन के पूर्वानुमान से भी चलनिधि की जमाखोरी कर सकते हैं।

प्रमुख अनिश्चितताएं: चूंकि बैंक बढ़ी हुई वर्धित अनिश्चितताओं में जटिल वित्तीय नेटवर्क संरचनाओं के तहत परिचालन करते हैं, इसलिए वे निकृष्टतम परिदृश्य में भी निर्णय ले सकते हैं। साथ ही घबराहट और अनिश्चितता के चलते गैर-चलनिधियुक्त बैंकों की गुणवत्ता में गिरावट आ सकती है जिससे वित्तीय तनाव और बढ़ता है। वित्तीय संकट के दौरान अमरीका में अत्यधिक अर्थसुलभ आस्तित्व वाले बैंकों की मूल जमा राशियों में अंतर्वाह के प्रमाण देखे गए हैं (बेरोस्पाइड 2013)।

केंद्रीय बैंक द्वारा अलग-अलग संस्थाओं में चलनिधि के प्रत्यक्ष अंतर्वेशन से अंतर-बैंक बाजार की कठिनाइयों को कम किया जा सकता है। फिर भी, जब अनिश्चितता बनी रहती है, बैंक चलनिधि जमाखोरी को प्राथमिकता देते हैं और एक-दूसरे को उधार देने में रोक लगाते हैं, जिससे चलनिधि सुविधाओं के लाभ घट जाते हैं। बेरोस्पाइड (2013) के अनुसार अमरीका में 2007 और 2008 में बैंकिंग उद्योग को 820 बिलियन अमरीकी डॉलर उपलब्ध कराने के बावजूद, बैंकों द्वारा निधि केंद्रीय बैंक की आरक्षित निधि में रखा गया जिससे आरक्षित निधियों में 2008 में 765 बिलियन अमरीकी डॉलर और 2009 में 318 बिलियन अमरीकी डॉलर का इजाफा हुआ।

अतः चलनिधि की जमाखोरी बढ़ी हुई अनिश्चितताओं के प्रति बैंकों की तर्कसंगत प्रतिक्रिया हो सकती है लेकिन यह अंतर-बैंक बाजार के कुशल परिचालन में एक और बड़ी बाधा बन सकती है और साथ ही प्रतिपक्ष जोखिम, जानकारी में भिन्नता और केंद्रीय बैंकों से उधार लेने संबंधी संभावित निंदा के चलते हो रही सामान्य कठिनाइयों के अतिरिक्त है (गेल और योरुलमजेर, 2011)।

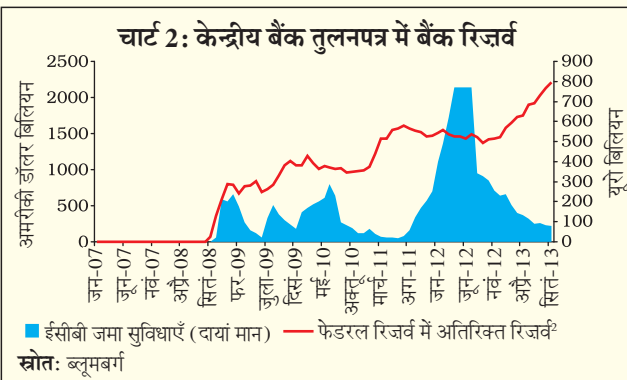
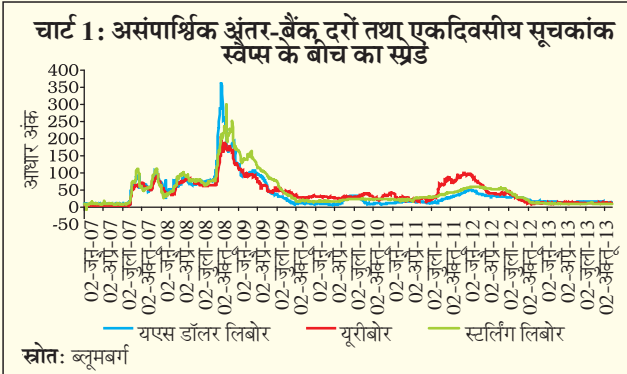
संदर्भ:

बेरोस्पाइड, जे.एम. (2013): "बैंक लिक्विडिटी होर्डिंग ऐंड दी फाइनेंशियल क्राइसिस: ऐन एम्पिरिकल इवैल्यूएशन", एफईडीएस वर्किंग पेपर नं. 2013-03, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स ऑफ दी फेडरल रिजर्व सिस्टम।

डाइमंड, डी.डब्ल्यू. ऐंड आर.जी. राजन (2009): "दी क्रेडिट क्राइसिस: कन्जेक्चर्स अबाउट कॉजस ऐंड रेमिडीस", अमेरिकन इकनामिक रिव्यू, 99(2): 606-10.

गेल, एम.डी. ऐंड टी.योरुलमजेर (2011): "लिक्विडिटी होर्डिंग", फेडरल रिजर्व बैंक ऑफ न्यू यार्क स्टाफ रिपोर्ट नं. 488, न्यू यार्क।

गोर्टन, जी. ऐंड ए. मेट्रिक (2012): "सेक्यूटिराइज्ड बैंकिंग ऐंड दि रन ऑन रिपो", जर्नल ऑफ फाइनेंशियल ईकनामिक्स, 104(3): 425-451.



² जुलाई 2013 से अतिरिक्त आरक्षित निधि की गणना "बनाए रखी गयी कुल आरक्षित निधि" से "अपेक्षित आरक्षित निधि शेष" घटाकर की जाती है।

सारणी II.2: बैंकों की अंतरराष्ट्रीय आस्तियों और देयताओं में वृद्धि

(प्रतिशत)

मद	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13
कुल आस्तियां	0.2	5.8	-1.8	-5.2
1. बाह्य आस्तियां	0.2	6.1	-2.3	-5.5
ऋण और जमाराशियां	-0.8	6.9	-2.5	-7.7
धारित प्रतिभूतियां और अन्य आस्तियां	3.0	4.0	-1.8	0.4
2. विदेशी मुद्राओं में स्थानीय आस्तियां	0.7	6.9	1.5	-3.1
कुल देयताएं	-0.6	7.3	-1.0	-5.8
1. बाह्य देयताएं	-0.9	7.7	-1.4	-6.4
ऋण तथा जमाराशियां	-1.3	5.8	-2.3	-8.6
प्रतिभूतियों के स्वयं के निर्गम और अन्य देयताएं	4.3	29.1	7.0	12.5
2. विदेशी मुद्रा में स्थानीय देयताएं	-6.1	11.8	2.2	-4.2

स्रोत: अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक, स्थानिक बैंकिंग सांख्यिकी से संकलित।

लीवरेज में असमान गिरावट

2.13 विभिन्न देशों के बीच कुल आस्ति की तुलना में कुल पूंजी (और आरक्षित निधि) अनुपात के प्रतिशत से नापे गए लीवरेज अनुपात के विश्लेषण से स्थिति में भिन्नता का पता चलता है। अमरीका और फ्रांस के बैंकों में तेज डिलीवरेजिंग हुई थी (चार्ट II.5)।

यूरो क्षेत्र की परिधि के देशों की आस्ति गुणवत्ता बदतर हुई

2.14 वर्ष 2012 के दौरान, अमरीका और कोर यूरो क्षेत्र के देशों के बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में सुधार हुआ था। किंतु यूरो क्षेत्र की परिधि के देशों की आस्ति गुणवत्ता में तेज गिरावट हुई

सारणी II.3: चुनिंदा देशों के बैंकों का जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात

(प्रतिशत)

देश	2007	2008	2009	2010	2011	2012
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं						
फ्रांस	...	10.5	12.4	12.7	12.3	14.5
जर्मनी	12.9	13.6	14.8	16.1	16.4	17.9
ग्रीस	11.2	10.0	11.7	12.3	-1.7	9.6
इटली	10.1	10.4	11.7	12.1	12.7	13.3
जापान	13.3	11.3	11.2	13.3	13.8	14.2
पुर्तगाल	10.5	9.4	10.5	10.3	9.8	12.6
स्पेन	11.4	11.3	12.2	11.9	12.1	11.4
यूनाइटेड किंगडम	12.6	12.9	14.8	15.9	15.7	16.4
अमरीका	12.8	12.8	13.9	14.8	14.7	14.5
उभरते बाजार तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाएं						
रूस	15.5	16.8	20.9	18.1	14.7	13.7
चीन	8.4	12.0	11.4	12.2	12.7	13.3
भारत	12.3	13.0	14.3	15.2	13.1	13.1
मलेशिया	14.8	16.1	18.2	17.5	17.7	17.6
ब्राजील	18.8	17.7	18.7	16.9	16.3	16.4
मेक्सिको	15.9	15.3	16.5	16.9	15.7	15.9

टिप्पणी: उपलब्ध नहीं

इटली के 2012 के आंकड़े जून के हैं।

स्रोत: अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के वित्तीय सुदृढ़ता संकेतकों से संकलित।

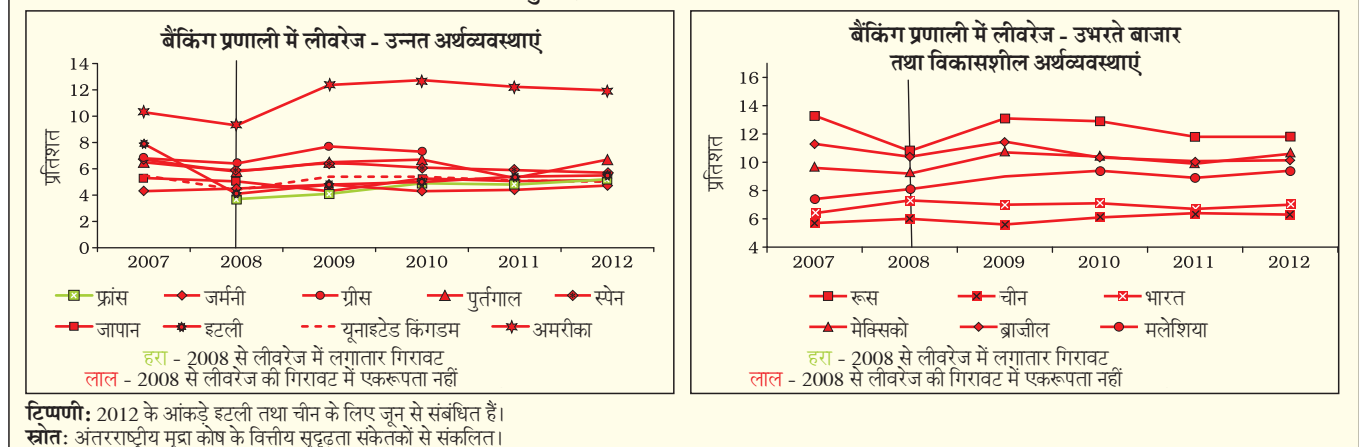
(चार्ट II.6)। ईएमडीई के बीच, अधिकतर अर्थव्यवस्थाओं में संकट के बाद के वर्षों में आस्ति गुणवत्ता में काफी सुधार हुआ।

3. चुनिंदा क्षेत्रों और देशों में बैंकिंग की प्रवृत्तियां

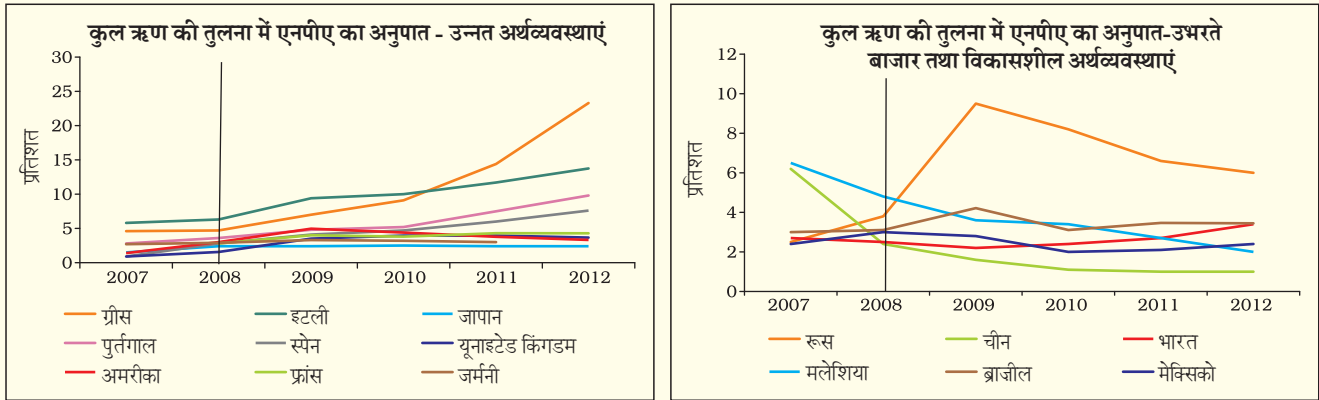
अमरीकी बैंकिंग प्रणाली - तुलनपत्र में सुधार प्रगत अवस्था में है

2.15 अमरीकी बैंकिंग प्रणाली ने हाल के वित्तीय संकट के बाद से तुलनपत्र में सुधार करने और पूंजी निर्माण की दिशा में काफ़ि प्रगति की है। बैंकों ने अपनी टियर - I पूंजी, आस्ति और इक्विटी आस्ति

चार्ट II.5: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं की बैंकिंग प्रणाली में लीवरेज



चार्ट II.6: चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में बैंकों की आस्तियों की गुणवत्ता



स्रोत: अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के वित्तीय सुदृढ़ता संकेतकों से संकलित।

अनुपात बढ़ाकर अपने तुलनपत्रों का जोखिम काफी कम कर लिया है (चार्ट II.7)। अमरीकी बैंकिंग प्रणाली के निष्पादन में सुधार को दर्शाते हुए, मूडीज नामक क्रेडिट रेटिंग संस्था ने अमरीका संबंधी अपनी बैंकिंग संभावना में मई 2013 में इसे नकारात्मक से परिवर्तित करके स्थिर दर्शाया है।

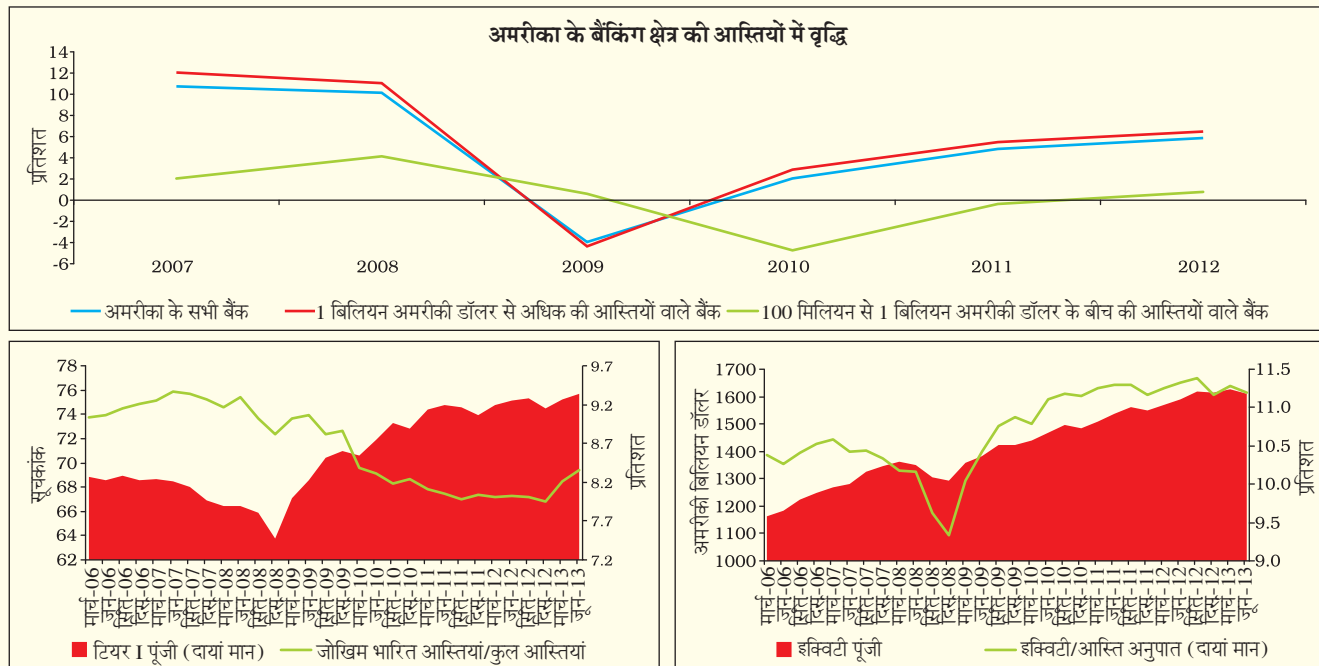
अमरीकी बैंकों की लाभप्रदता में सुधार

2.16 अमरीकी बैंकिंग प्रणाली की लाभप्रदता में सुधार हुआ। यह मुख्यतः ऋण हानि आरक्षित निधि में आई कमी से प्रेरित था (चार्ट II.8)।

यूरो क्षेत्र की बैंकिंग प्रणाली में निधीयन की स्थिति में सुधार हुआ

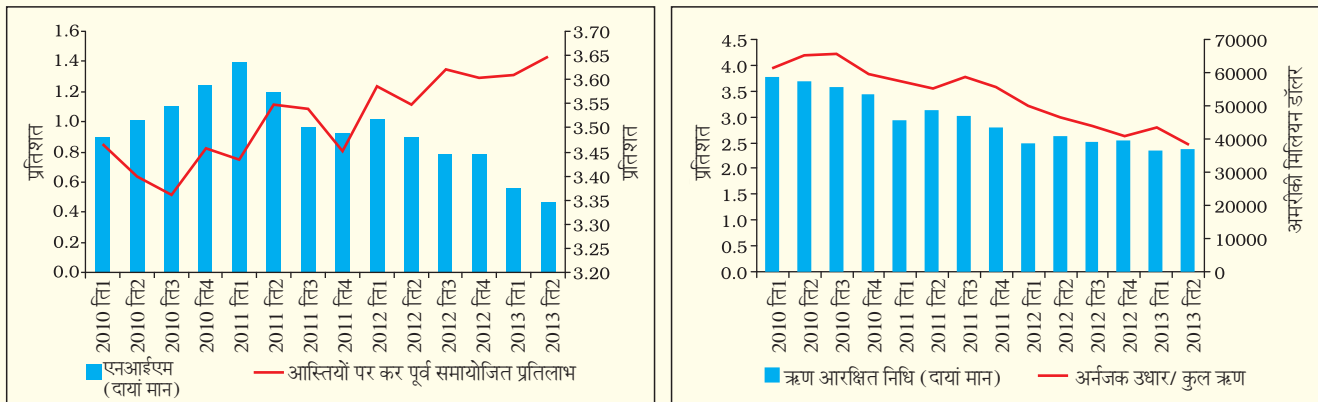
2.17 आउटराइट मोनेटरी ट्रान्जैक्शन (ओएमटी) जैसे प्राधिकारियों द्वारा किए गए विभिन्न उपायों और ईसीबी द्वारा की गई मौद्रिक सुगमता के कारण यूरो क्षेत्र की वित्तीय स्थिति में 2012 के मध्य से आगे सुधार हुआ। 2013 के प्रारंभ के साइप्रस संकट के बावजूद एकल बैंकिंग संघ के प्रस्ताव से भी अनुकूल प्रभाव पड़ा (चार्ट II.9क; बाक्स II.3)। यूरो क्षेत्र में सुगम

चार्ट II.7: अमरीकी बैंकिंग प्रणाली की प्रगति



स्रोत: ब्लूमबर्ग और एफडीआईसी डाटाबेस पर आधारित।

चार्ट II.8: अमरीकी बैंकों के लाभ तथा अर्जक ऋण



स्रोत: ब्लूमबर्ग।

होती वित्तीय स्थिति से बैंकों की निधीयन की स्थिति में सुधार हुआ। इसके परिणामस्वरूप, बैंकों ने अपनी तीन-वर्षीय दीर्घावधि पुनर्वित्त परिचालन (एलटीआरओ) निधि की 23 जनवरी 2013 से चुकौती शुरू की (चार्ट II.9ख)। एलटीआरओ निधि की चुकौती यह दर्शाती है कि अनेक यूरोपीयन बैंकों ने फरवरी 2012 में शुरू हुई द्वितीय एलटीआरओ के स्थान पर दिसंबर 2011 में शुरू हुई प्रथम तीन वर्षीय एलटीआरओ की चुकौती को तरजीह दी जो कि इस बात को दर्शाता है कि बैंकों ने दीर्घकालिक परिपक्वता वाली निधि को अपने पास रखने को तरजीह दी।

यूरोपीयन बैंकों का डिलीवरेज जारी रहा

2.18 मंद वृद्धि, कड़ी विनियामक अपेक्षाओं और वित्तीय विखंडन की पृष्ठभूमि में यूरोपीयन बैंकों ने 2012 में अपने

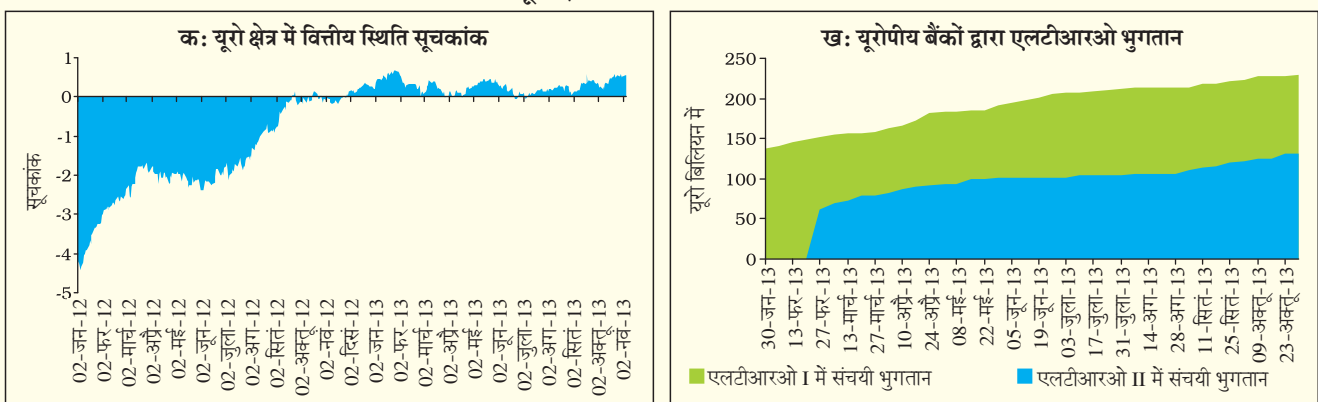
तुलनपत्रों में सुधार करना जारी रखा। लीवरेज अनुपात और ऋण-जमा अनुपात में 2008 के के स्तर से काफी गिरावट आई (चार्ट II.10)। थोक निधीयन पर निर्भरता में भी काफी कमी आ गई।

2.19 यूरोपीयन बैंकों ने अपने कुल विदेशी दावों में 2008 के स्तर से 33 प्रतिशत से भी अधिक कमी की (चार्ट II.11)। किंतु बैंकों के ऋण संविभाग और लाभप्रदता - दोनों में निरंतर खराबी से भविष्य में कुछ यूरोपीयन बैंकों के सामने चुनौती आ सकती है।

वित्तीय विखंडन निरंतर बना रहेगा

2.20 यूरो क्षेत्र के बैंकों की वित्तीय स्थिति में काफी सुधार होने के बावजूद बैंक ऋण में तेजी नहीं आई जिससे उचित वसूली न हो

चार्ट II.9: यूरो क्षेत्र में वित्तीय तथा चलनिधि स्थिति



स्रोत: ब्लूमबर्ग।

बॉक्स II.3:

साइप्रस में बैंकिंग संकट और वित्तीय स्थिरता पर इसका प्रभाव

यूरो क्षेत्र का हिस्सा, साइप्रस पर यूरोपीय ऋण संकट का प्रभाव जनवरी 2013 में पड़ा। साइप्रस में संकट का उद्भव ग्रीस में 2012 में हुए सरकारी ऋण संकट में निहित है क्योंकि साइप्रस के बैंकों द्वारा ग्रीस के सरकारी बांडों में भारी निवेश किया गया था और साथ ही ग्रीस के निजी क्षेत्र को उधार दिया गया था। 2012 में ग्रीस के सरकारी ऋण के पुनर्निर्धारण का इन बैंकों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। संकट के साथ-साथ साइप्रस की और बिगड़ती राजकोषीय स्थिति के कारण साइप्रस की ऋण-शोधन क्षमता चिंता का विषय बन गयी। इसके चलते साइप्रस के बड़े बैंकों की पूंजी संबंधी जरूरतों में भारी वृद्धि हुई जो करीब-करीब 9 बिलियन यूरो थी जो कि साइप्रस के जीडीपी के 50 प्रतिशत के समतुल्य है (ईसीबी, 2013)। 16 मार्च 2013 को साइप्रस सरकार ने देश के दूसरे बड़े बैंक, साइप्रस लैकी बैंक को बंद करने और 100,000 यूरो की जमा राशियों को बैंक ऑफ साइप्रस में अंतरित करने के लिए यूरो समूह के साथ करारनामा किया। इसके साथ ही यह निर्णय लिया गया कि ट्रॉइका [यूरोपीय आयोग, यूरोपीय केंद्रीय बैंक (ईसीबी) और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ)] से प्राप्त 10 बिलियन यूरो के बेलआउट के बदले में साइप्रस सरकार द्वारा अभीमाकृत जमाओं, जो बड़ी मात्रा में अनिवासियों द्वारा धारण किया गया है, पर व्यापक हेयरकट लगाया जाए। इस करारनामे के तहत, 100,000 यूरो के समतुल्य या उससे कम की अभीमाकृत जमाओं पर कोई असर नहीं पड़ा। देशी बैंकों से निधि के बहिर्गमन को रोकने के लिए साइप्रस प्राधिकारियों ने देशी एवं सीमा पार अंतरणों और भुगतान पर अस्थायी प्रतिबंध भी लगाया है।

साइप्रस अर्थव्यवस्था और वित्तीय स्थिरता पर प्रभाव

बैंक ऑफ साइप्रस और लैकी, इन दो सबसे बड़े बैंकों के लिए जो योजनाएं बनाई गई हैं, वे खासकर साइप्रस के लिए विवादास्पद हैं क्योंकि इन योजनाओं के तहत जिन खाताधारकों का इन बैंक खातों में अत्यधिक शेष है उनको भारी घाटा सहना पड़ेगा। आईएमएफ, जो बेलआउट राशि का 10 प्रतिशत प्रदान कर रहा है, के अनुसार 95 प्रतिशत खाताधारकों को हानि नहीं पहुँचेगी क्योंकि अधिकांश खातों में 100,000 यूरो से कम राशि शेष है। फिर भी, इन बैंक खातों में 100,000 यूरो से अधिक शेष रखने वाले खाताधारकों को अपनी बचत की कुछ राशि की हानि उठानी पड़ेगी। यद्यपि सही राशि का निर्णय अब तक नहीं हो पाया है, प्राक्कलन के अनुसार उन्हें 60 प्रतिशत तक की राशि की हानि उठानी पड़ सकती है। प्रतिदिन खाते से कितनी राशि निकाली जा सकती है इस पर प्रतिबंध अभी भी जारी है। सेंट्रल बैंक ऑफ साइप्रस के आंकड़े दर्शाते हैं कि साइप्रस बैंकों से जमा राशि के आहरण के संबंध में तनाव की स्थिति लगातार बनी हुई है। जनवरी के अंत से सितंबर 2013 के बीच जमा राशियों में संचित आधार पर लगभग 30.6 प्रतिशत की गिरावट आई है (सारणी 1)। जमा राशियों में आई अचानक गिरावट दर्शाती है कि विदेशियों ने काफी बड़ी मात्रा में अपना हिस्सा निकाल लिया है।

साइप्रस अर्थव्यवस्था की अल्पकालिक वृद्धि की संभावना अत्यंत निराशाजनक है क्योंकि यह अनुमान लगाया गया है कि 2013 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में लगभग 7.7 प्रतिशत की गिरावट आ सकती है। ट्रॉइका यूरो ज़ोन और साइप्रस के बीच के समझौता ज्ञापन में स्वीकृत घाटे के लक्ष्य के

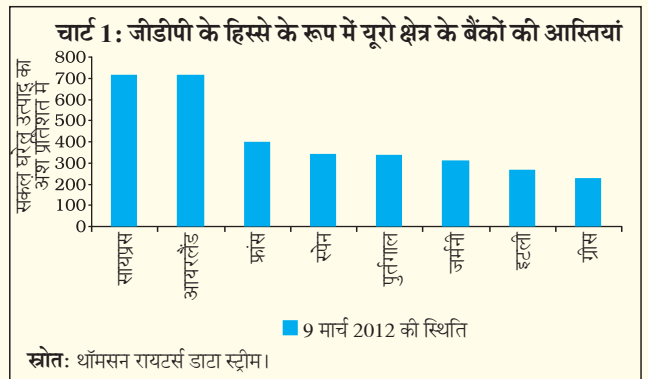
सारणी 1: सायप्रिओट बैंकों में शेष जमा राशि में परिवर्तन

(यूरो बिलियन में)

	घरेलू	अन्य यूरो क्षेत्र	बकाया विश्व	कुल
फर-मार्च 2013	-1.3	-0.5	-1.9	-3.8
अप्रैल-जून 2013	-0.6	-0.1	-0.7	-1.4
जुला-सितं 2013	-2.6	-0.6	-2.1	-5.3
संचयी (फर-सितं 2013)	-7.6	-1.2	-7.9	-16.8

स्रोत: सेंट्रल बैंक ऑफ सायप्रस।

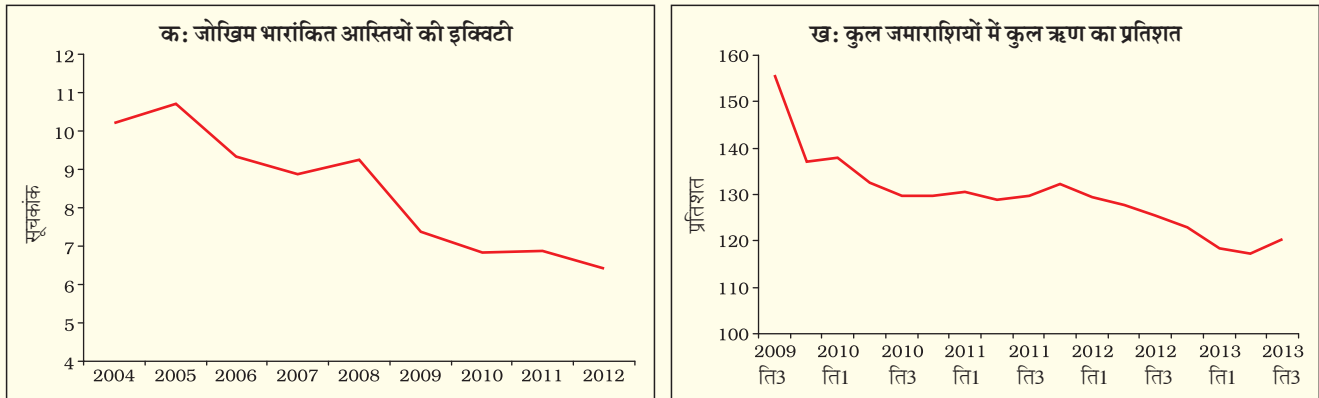
अनुसार 2013-14 में अर्थव्यवस्था में संचित आधार पर करीब-करीब 12.5 प्रतिशत की गिरावट आएगी और यह पूर्वानुमान है कि 2015 में वृद्धि होगी। दूसरा सबसे बड़ा बैंक, लैकी के बंद होने से जीडीपी पर पड़े प्रत्यक्ष प्रभाव और विदेश से धन के प्रवाह को बढ़ावा देने के लिए तैयार किए गए बैंकिंग मॉडल के विनाश के अलावा संबंधित उद्योगों, खासकर पर्यटन उद्योग, के आपसी प्रभावों के असर से अर्थव्यवस्था को हानि उठानी पड़ेगी। इसके साथ ही कुल जीडीपी के प्रतिशत के रूप में साइप्रस की बैंक आस्तियां अन्य यूरो क्षेत्र की अर्थव्यवस्थाओं से अधिक हैं (चार्ट 1)। उपभोक्ताओं और निवेशकों में निवेश को लेकर विश्वास संबंधी झटका महसूस किया गया है। इस प्रकार साइप्रस द्वारा सामना की जा रही वर्तमान समस्या यह है कि बैंकिंग प्रणाली में विश्वास किस प्रकार बहाल किया जाए। ट्रॉइका द्वारा 7 नवंबर 2013 को की गई साइप्रस अर्थव्यवस्था की समीक्षा में उल्लेख किया गया है कि सभी राजकोषीय लक्ष्यों को, प्रक्रियाधीन राजकोषीय समेकन संबंधी महत्वपूर्ण उपायों और विवेकपूर्ण बजट निष्पादित करने के जरिए, पूरा किया गया है। ट्रॉइका द्वारा नवंबर में की गई समीक्षा के बाद दिसंबर 2013 में यूरोसमूह और आईएमएफ के कार्यपालक मंडल द्वारा किए जाने वाले अनुमोदन से साइप्रस को ईएसएम से 100 मिलियन यूरो और आईएमएफ से लगभग 86 मिलियन यूरो का संवितरण होगा। इससे बीमार अर्थव्यवस्था को थोड़ी राहत पहुँचेगी। फिर भी साइप्रस क्राइसिस से वैश्विक वित्त बाजार में कोई विघ्न नहीं पड़ा है और यह बहुत हद तक देशी अर्थव्यवस्था तक ही सीमित है।



संदर्भ:

ईसीबी: (2013): वित्तीय स्थिरता समीक्षा, मई 2013

चार्ट II.10: यूरो क्षेत्र की बैंकिंग प्रणाली के लिए लीवरेज और ऋण-जमाराशि अनुपात



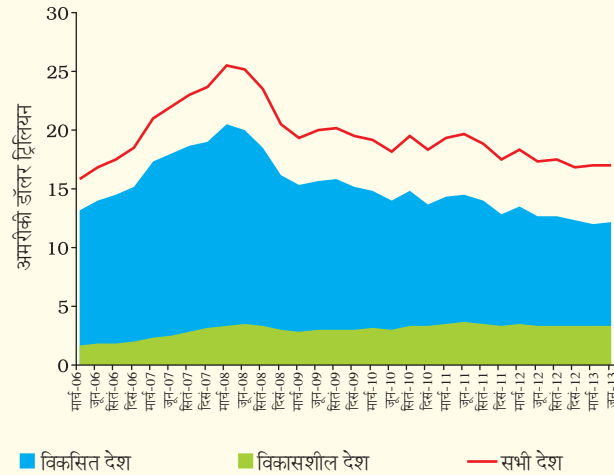
स्रोत: ब्लूमबर्ग

पाने का जोखिम उत्पन्न हो गया (चार्ट II.12क)। इसके अलावा, एलटीआरओ के माध्यम से निधि की आपूर्ति करने के बावजूद परिधीय तथा कोर देशों के बीच वित्तीय विखंडन निरंतर बना हुआ है। देशों और उधारकर्ताओं के बीच उधार दरों में काफी भिन्नता बनी रही जिससे निभावी मौद्रिक नीति से बैंक उधार की शर्तों में कम अंतरण का पता चलता है।

यूके बैंकिंग प्रणाली - निधीयन की स्थितियों में सुधार हुआ

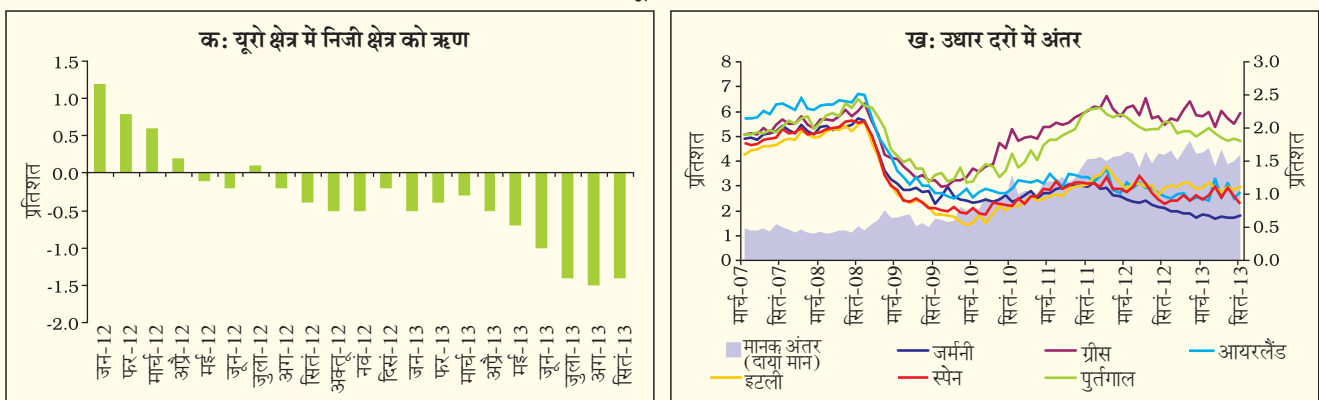
2.21 वैश्विक वित्तीय स्थिति में सुधार के चलते यूके के बैंकों की निधीयन स्थिति में भी सुधार हुआ। जहां बैंकिंग प्रणाली के माध्यम से खुदरा ऋण के प्रवाह में हाल की अवधि में वृद्धि हुई है, वहीं कारपोरेट्स को दिए जाने वाले ऋण में तेजी नहीं आ पाई (चार्ट II.13)। यूके के बैंकों के सामने

चार्ट II.11: यूरोपीय बैंकों द्वारा विदेशी कार्यकलापों का डिलीवरेजिंग



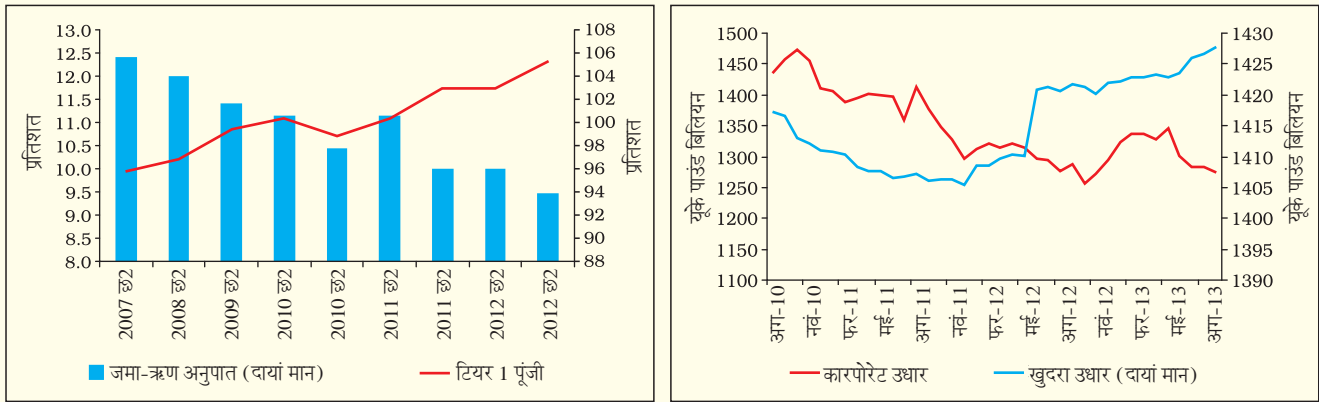
टिप्पणी: यूरोपीय बैंकों के कुल समेकित विदेशी दावे -तुरंत उधारकर्ता आधार।
स्रोत: बीआईएस डेटाबेस

चार्ट II.12: यूरो क्षेत्र में ऋण तथा उधार दरें



स्रोत: ईसीबी तथा थॉमसन रायटर्स डेटास्ट्रीम।

चार्ट II.13: यूके के लिए प्रमुख बैंकिंग सूचकांक



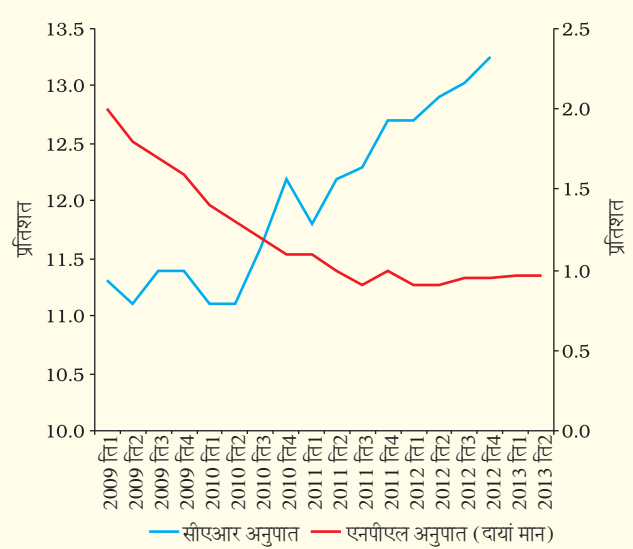
स्रोत: ब्लूमबर्ग

बहुत बड़ा जोखिम है क्योंकि यूरो क्षेत्र के परिधीय देशों के प्रती उनका कुल जोखिम काफी अधिक अर्थात् लगभग 140 बिलियन यूके पाउंड है जो कि 2012 के अंत में उनकी सूचित टियर 1 पूंजी का 65 प्रतिशत है।

चीन की बैंकिंग प्रणाली - निरंतर वृद्धि

2.22 चीन की बैंकिंग प्रणाली में 2012 में निरंतर वृद्धि होती रही जिसमें पूंजी पर्याप्तता अनुपात उच्च था और अनर्जक ऋणों (एनपीएल) का स्तर कम था (चार्ट II.14)। किंतु छाया बैंकिंग में वृद्धि चिंता का मामला है, हालांकि छाया बैंकिंग प्रणाली से ऋण प्रवाह पूर्ववर्ती उच्च स्तर से कम हो गया है (सारण II.4)।

चार्ट II.14: चीनी बैंकिंग के संकेतक



स्रोत: ब्लूमबर्ग।

सारणी II.4: चीन की छाया बैंकिंग प्रणाली

(रेनमिनबी बिलियन में)

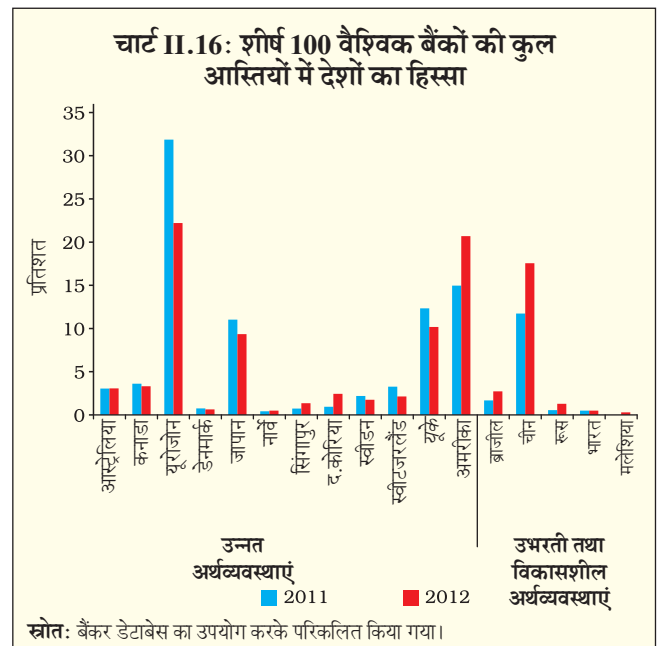
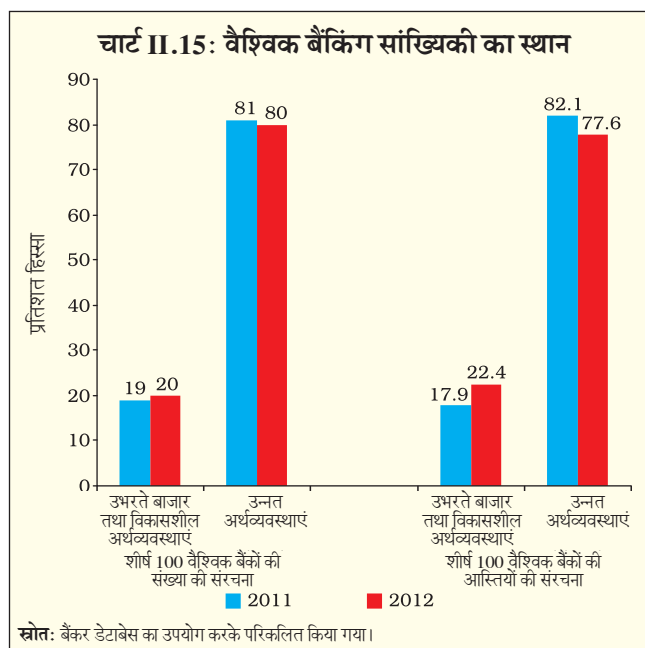
	दिसंबर-08	दिसंबर-09	दिसंबर-10	दिसंबर-11	दिसंबर-12	सितंबर-13
इन्ट्रस्टेड ऋण	25.5	34.7	154.9	117.3	207.9	221.7
न्यास ऋण	21.4	71	-28.8	38.9	259.8	111.6
छूट के बिना बैंकरों की स्वीकृति	-148.6	87.4	157.6	185.1	263.7	-8.2
गैर-वित्तीय बैंकिंग कंपनियों द्वारा वित्तपोषित इक्विटी	31.5	81.5	95.4	35	13.5	11.3
कुल	-70.2	274.6	379.1	376.3	744.9	336.4

स्रोत : ब्लूमबर्ग।

4. शीर्ष 100 वैश्विक बैंकों के निष्पादन का विश्लेषण

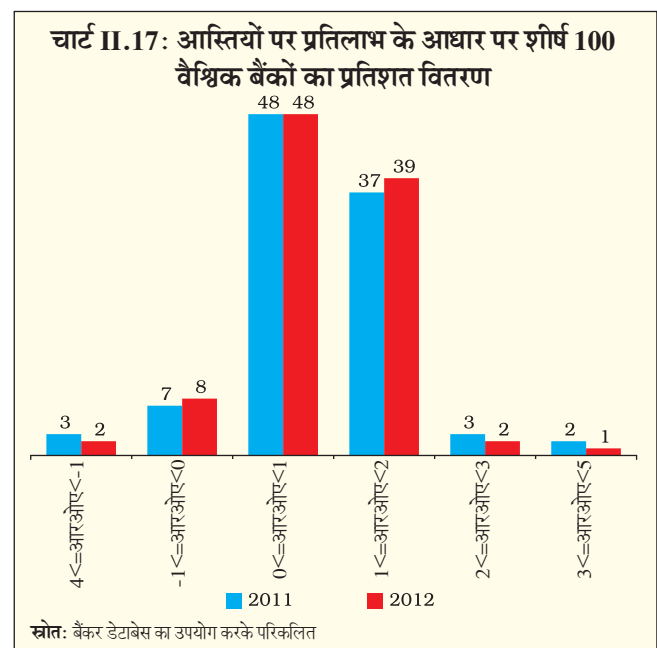
वैश्विक बैंकिंग में उभरती अर्थव्यवस्थाओं का हिस्से में निरंतर वृद्धि हुई है

2.23 बैंकर डाटाबेस द्वारा शीर्ष 100 वैश्विक बैंकों के निष्पादन के विश्लेषण से पता चलता है कि वैश्विक बैंकिंग कारोबार में उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से ईएमई में कुछ अंतरण की प्रवृत्ति 2012 में भी जारी रही जो कि शीर्ष 100 वैश्विक बैंकों की संख्या और आस्तियों की संरचना से देखी जा सकती है (चार्ट II.15)। यह अंतरण ईएमडीई में निरंतर ऋण वृद्धि को और उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मंद ऋण वृद्धि को दर्शाता है। 2011 और 2012 के बीच उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के आस्तियों के हिस्से में गिरावट यूरोप, जापान और यूके के बैंकों में संकेंद्रित थी (चार्ट II.16)। ईएमडीई के बीच चीन के बैंकों ने शीर्ष 100 बैंकों के बीच काफी सुधार दर्शाया क्योंकि इंडस्ट्रियल एंड कमर्शियल बैंक ऑफ चाइना टियर 1 पूंजी के आधार पर पहली बार शीर्ष स्तर पर पहुंच गया।



वैश्विक बैंकों की लाभप्रदता मंद बनी रही

2.24 शीर्ष 100 बैंकों का लाभ लगभग 2012 जैसा ही बना रहा (चार्ट II.17)। इन बैंकों का कुल लाभ 2011 के 557



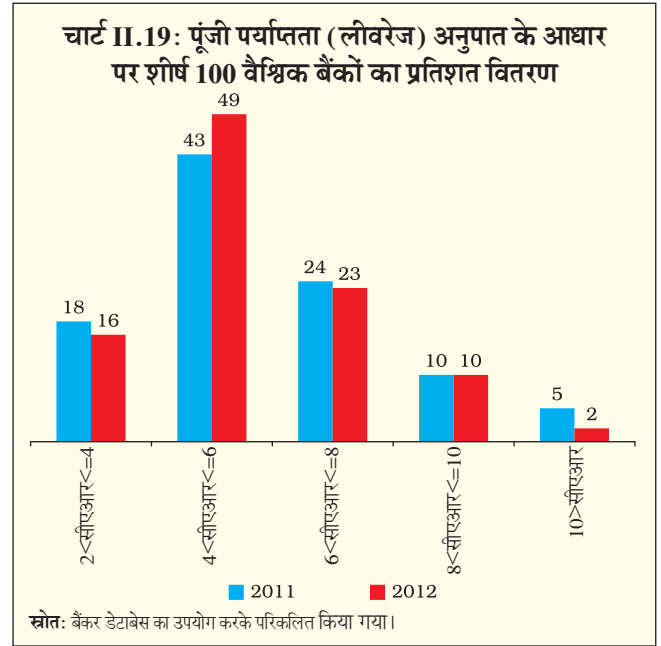
बिलियन अमरीका डालर से बढ़कर 2012 में 590 बिलियन अमरीकी डालर हो गया जो कि मुख्यतः एशिया-पैसिफिक क्षेत्र के बैंकों से प्रभावित था।

वैश्विक बैंकों ने अपनी पूंजी पर्याप्तता स्थिति को सुदृढ़ किया

2.25 शीर्ष 100 बैंकों की पूंजी पर्याप्तता की स्थिति से पता चलता है कि पूंजी पर्याप्तता अनुपात के उच्च दायरे अर्थात् 17 प्रतिशत से अधिक के बैंकों की संख्या में वृद्धि हुई जो कि बैंकों की पूंजी की स्थिति को मजबूत करने के वैश्विक प्रयासों को दर्शाती है (चार्ट II.18)। शीर्ष के सभी 100 बैंक बासेल II संरचना के अंतर्गत 8 प्रतिशत सीआरएआर के बीसीबीएस मानदंड की तुलना में अधिक पूंजी पर्याप्तता स्तर बनाए रख रहे हैं।

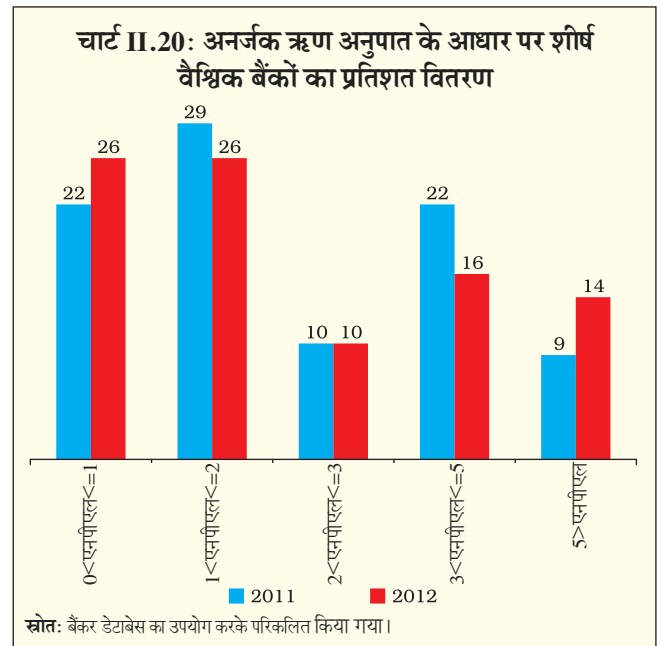
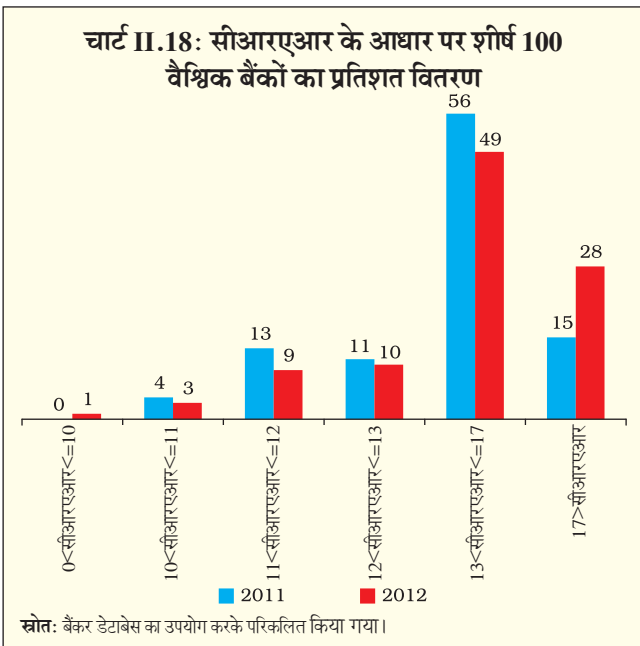
वैश्विक बैंकों की डिलीवरेजिंग की मंद प्रगति

2.26 सीआरएआर में सुधार के बावजूद वैश्विक बैंकों, विशेष रूप से यूरो क्षेत्र के परिधीय बैंकों की स्थिति दुर्बल बनी रही। किंतु 2012 के अंत में 4 प्रतिशत से कम पूंजी पर्याप्तता अनुपात - वित्तीय लीवरेज की नाप - की दृष्टि से सुस्थिति वाले बैंकों की संख्या में कमी आई (चार्ट II.19)।

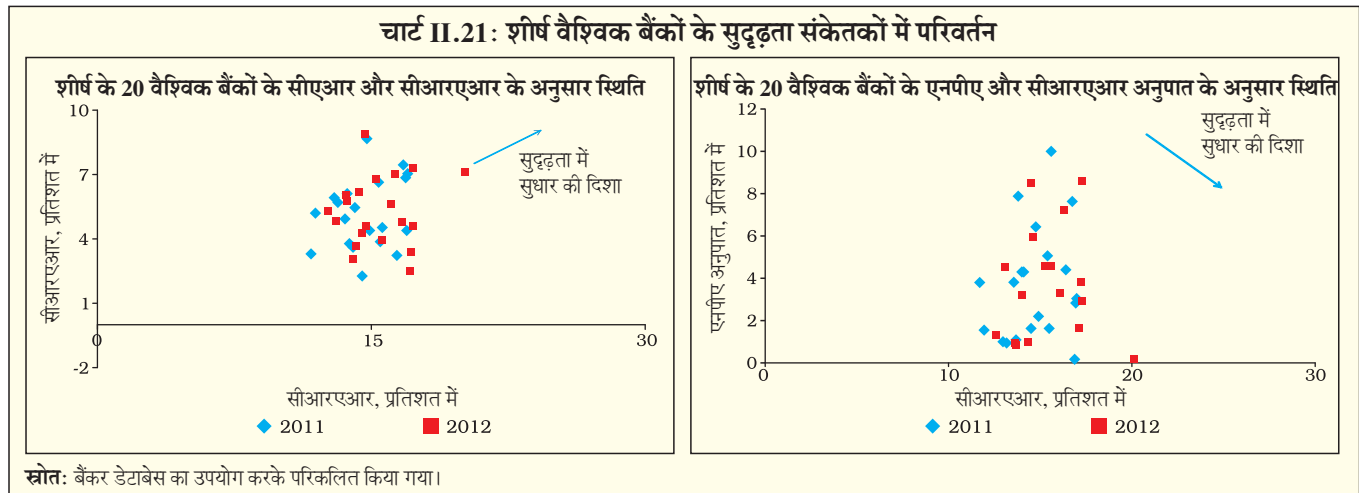


वैश्विक बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में समिश्र प्रवृत्ति देखी गई

2.27 अनिश्चित वित्तीय वातावरण के बीच, वैश्विक बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में समिश्र प्रवृत्ति देखी गई (चार्ट II.20)। सीआरएआर, सीएआर और एनपीए अनुपात को कवर करते हुए



चार्ट II.21: शीर्ष वैश्विक बैंकों के सुदृढ़ता संकेतकों में परिवर्तन



शीर्ष 20 बैंकों की स्थिति से स्पष्ट रूप से यह पता चलता है कि जहां बैंक 2011 और 2012 के दौरान अपना सीआरएआर बढ़ाने की प्रक्रिया में थे, वहीं 2012 के दौरान बैंकों के एनपीए अनुपातों में कोई खास सुधार नहीं दिखा (चार्ट II.21)।

5. वैश्विक नीतिगत सुधार

विनियामक सुधारों में प्रगति

2.28 भावी जोखिम को कम करके वित्तीय क्षेत्र को सुदृढ़ करने और मजबूत आर्थिक वृद्धि की सहायता करने के लिए 2009 में शुरू किए गए वैश्विक विनियामक सुधारों में अनेक क्षेत्रों में प्रगति हुई है। बासेल III संरचना, प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं (एसआईएफआई) और वित्तीय बाजार की बुनियादी सुविधाओं के संबंध में नीति निर्माण में हाल की अवधि में काफी प्रगति हुई है।

बासेल III संरचना

2.29 बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति (बीसीबीएस) द्वारा विकसित बासेल III संरचना बैंकिंग क्षेत्र के विनियमन, पर्यवेक्षण और जोखिम प्रबंधन को मजबूत करने के सुधारात्मक उपायों का सेट है। जनवरी 2013 में, बीसीबीएस ने चलनिधि कवरेज अनुपात पर संशोधित दिशानिर्देश जारी किए जो कि बैंकों की आघात-सहनीयता को बढ़ाते हैं जिसके लिए यह सुनिश्चित किया जाता है कि बैंक निधीयन की स्थितियां विपरीत होने की स्थिति

का सामना करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाली चलनिधि आस्तियों का पर्याप्त स्टॉक बनाए रखें। बासेल III सुधारों के कार्यान्वयन के लिए जनवरी 2013 और दिसंबर 2018 के बीच की अवधि निर्धारित की गई है।

2.30 बासेल III कार्यान्वयन की बीसीबीएस की 9 अक्टूबर 2013 की प्रगति रिपोर्ट के अनुसार बासेल समिति के अंतर्गत के 27 क्षेत्राधिकारों में से 26 ने बासेल III आधारित पूंजी विनयमों का अंतिम सेट जारी किया है। इंडोनेशिया में नियमावली का प्रारूप बन गया है जिसे अंतिम रूप देने की प्रक्रिया जारी है।

प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण संस्थाएं (एसआईएफआई)

2.31 प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वैश्विक बैंकों (जी-एसआईबी) के प्रति विनियामक गतिविधियों में मुख्यतः कड़े विनियमन लागू करने पर ध्यान केंद्रित किया गया ताकि ऐसी बैंकिंग संस्थाओं में चूक की संभावना प्रणालीगत रूप से कम महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं के चूक के स्तर से कम की जा सके और साथ ही किसी एसआईएफआई की विफलता की स्थिति में वित्तीय प्रणाली और अर्थव्यवस्था को होने वाली हानि को कम किया जा सके।

2.32 जुलाई 2013 में बीसीबीएस ने जी-एसआईबी के आकलन और पहचान संबंधी और जी-एसआईबी की उच्च हानि अवशोषण अपेक्षा की अद्यतन कार्यप्रणाली लायी। अतिरिक्त हानि अवशोषण अपेक्षा का दायरा 1 प्रतिशत से 2.5 प्रतिशत

कॉमन इक्विटी टियर 1 (सीईटी 1) होगा जोकि बैंक के प्रणालीगत महत्व पर निर्भर होगा जिसमें बैंकों को प्रणालीगत रूप से और अधिक महत्वपूर्ण बनने से रोकने के साधन के रूप में 3.5 प्रतिशत सीईटी 1 की प्रारंभिक रिक्त बकेट होगी। वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) ने 2013 की अवधि के लिए जी-एसआईबी की सूची को अद्यतन किया है जिसमें 29 बैंकिंग संस्थाओं को सूचीबद्ध किया गया है।

बाजार: ओवर द काउंटर (ओटीसी) सुविधाएं

2.33 वैश्विक वित्तीय संकट ने डेरिवेटिव के व्यापार, सूचना और निपटान के साथ ही द्विपक्षीय व्यापार के लिए अपेक्षित पूंजी संबंधी प्रमुख कमियों को सामने ला दिया। सुधारों का प्रमुख बल इस बात पर रहा है कि अधिक ओटीसी द्विपक्षीय डेरिवेटिव संविदाओं को केंद्रीय प्रतिपक्षियों की ओर और जहां संभव हो वहां संगठित विनिमय व्यापार के प्लेटफार्म की ओर बढ़ाया जाए। इसके साथ ही, लेनदेनों की सूचना व्यापार भंडार को करने के माध्यम से बाजार की पारदर्शिता में संभाव्य वृद्धि की जाए।

2.34 वर्ष 2009 में जी-20 इस बात के लिए सहमत हुआ है कि मानकीकृत डेरिवेटिव लिखत का केंद्रीय निपटान और इलेक्ट्रॉनिक व्यापार 2012 के अंत तक लागू किया जाए। ओटीसी डेरिवेटिव बाजार सुधार लागू करने पर एफएसबी द्वारा सितंबर 2013 में जारी की गई प्रगति रिपोर्ट के अनुसार बाजार के सहभागियों द्वारा व्यापार की सूचना देने, ओटीसी ब्याज दर के केंद्रीय समाशोधन और ऋण डेरिवेटिव के लिए केंद्रीकृत बुनियादी सुविध के वास्तविक उपयोग में प्रगति हुई है। वर्तमान में, आधे से अधिक एफएसबी सदस्य क्षेत्राधिकारों में सभी प्रतिबद्धताएं पूरी करने के लिए विधायी संरचना लागू है।

बैंक संरचना विनियमन पर राष्ट्रीय पहल

2.35 अनेक उन्नत देश भी अपने-अपने देश में बैंक संरचना में संरचनात्मक सुधारों पर विचार कर रहे हैं और वे इन्हें लागू करने कि अलग-अलग अवस्थाओं में हैं। अमरीका में वॉल्कर रूल, यूके में विकर्स रिपोर्ट और यूरोपीयन संघ में लिक्विड रिपोर्ट इस संबंध में की जा रही कुछ पहलें हैं। यद्यपि इन पहलों का लक्ष्य वाणिज्य बैंकों के प्रमुख कार्यों को निवेश बैंकिंग और

प्रतिभूति बाजार के कार्यों से संबंधित हानियों से सुरक्षा प्रदान करके वित्तीय स्थिरता को मजबूत करना है, फिर भी किए जाने के लिए प्रस्तावित उपायों में भिन्नता है। वॉल्कर रूल वाणिज्य बैंकों द्वारा मालिकाना व्यापार पर रोक लगाता है; लिक्विड रिपोर्ट जोखिमयुक्त व्यापारी कार्यों को उसी होल्डिंग कंपनी के अंतर्गत किसी विशिष्ट सब्सिडीयरी में रखने की सिफारिश करती है और विकर्स रिपोर्ट मूल बैंकिंग कार्यों पर प्रतिबंधित दायरे की और व्यापारी तथा हामीदारी कार्यों को उसी होल्डिंग कंपनी के अंतर्गत किसी अलग संस्था में रखने की सिफारिश करती है।

6. समग्र आकलन

2.36 वर्ष 2012 के लिए वैश्विक बैंकिंग प्रणाली का विश्लेषण समिश्र दृश्य प्रस्तुत करता है। जहां अमरीकी बैंकों के मूल तत्व आस्ति गुणवत्ता में सुधार के कारण बेहतर हैं, वहीं वित्तीय विखंडन के कारण यूरो क्षेत्र की बैंकिंग प्रणाली में चिंता बनी हुई है। अप्रैल 2013 की वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि यूरो क्षेत्र की अनेक बैंकिंग प्रणालियां तुलनात्मक रूप से दुर्बल बनी हुई हैं क्योंकि सूचित बाधित ऋण की तुलना में पूंजी बफर कम हैं, आस्ति गुणवत्ता में निरंतर गिरावट आई है और लाभप्रदता कम है। ईएमडीई के बैंकों ने सामान्यतः अपना विनियामक पूंजी अनुपात बनाए रखा है। वैश्विक बैंकिंग प्रणाली को आगामी वर्षों में अनेक जोखिमों का सामना करना पड़ेगा क्योंकि उनपर दुर्बल ऋण और आर्थिक वृद्धि के बीच लाभप्रदता, विनियामक अनुपालन की बढ़ती लागत और राजस्व वृद्धि की समस्याओं का दबाव है।

2.37 अमरीकी फेडरल रिजर्व ने 18 सितंबर 2013 के अपने संप्रेषण में आश्चर्यजनक रूप से मासिक क्रय की 85 बिलियन अमरीकी डॉलर की गति को कम करना टाल दिया क्योंकि उसने निर्णय लिया था कि इस बात का इंतजार किया जाए कि उसके आस्ति क्रय की गति समायोजित होने से पहले प्रगति बनाए रखी जाएगी। अपारंपरिक मौद्रिक नीतियों की लंबी अवधि से अर्थव्यवस्था में वित्तीय जोखिम बढ़ सकता है क्योंकि बैंक और वित्तीय संस्थाएं अधिक प्रतिलाभ की खोज में अधिक जोखिम उठा सकती हैं। आर्थिक गतिविधियों की मंद गति और रोजगार

के स्तर में कुछ सुधार को देखते हुए अमरीकी फेडरल रिजर्व निकट भविष्य में अपनी अपारंपरिक नीति को छोड़ सकता है। यदि यह अपने आस्ति-क्रय को कम करता है तो वैश्विक ब्याज दर चक्र में ऊर्ध्वमुखी बदलाव आयेगा जो कि बैंकों की व्यापार बही आस्तियों के मूल्य को सीधे ही प्रभावित करेगा क्योंकि बैंकों ने अपनी ऋण जोखिम को कम करने की दृष्टि से वैश्विक वित्तीय संकट के समय से सरकारी प्रतिभूतियों में अधिक निवेश किया था। यदि कम आर्थिक वृद्धि के साथ उच्च ब्याज दर चक्र बना रहता है तो बैंकों को उच्च अनर्जक ऋणों का सामना करना

पड़ेगा। ईएमडीई के बैंक बेहतर स्थिति में हैं क्योंकि अंतरराष्ट्रीय बाजारों पर उनकी निधीयन की निर्भरता सीमित है किंतु वे भी आर्थिक वृद्धि में गिरावट, पूंजी बहिर्वाह और विदेशी मुद्रा बाजार की अस्थिरता का सामना कर रहे हैं। विभिन्न देशों में बैंकिंग प्रणालियों ने अपने तुलपत्रों की स्थिति में सुधार करना जारी रखना चाहिए। विनियामक सुधारों की समय पर पूर्णता और कार्यान्वयन से बैंकिंग प्रणाली का जोखिम कम हो जाएगा, वह अधिक आघात-सहनीय बनेगी और प्रणाली की स्थिरता का भावी जोखिम कम हो जाएगा।